दो राजनीतिज्ञों की कहानी

असेंबली के सदस्य उपेंद्र चिवुकुला के दफ्तर से साभार

आशीष कुमार सेन

नवंबर 2005 में दो राजनेताओं ने न्यू जर्सी स्टेट असेम्बली के लिए चुनाव लड़ा। उनमें से एक थे डेमोक्रेट और दूसरे रिपब्लिकन। एक जीते, दूसरे हार गए। दिलचस्प बात यह है कि दोनों भारतीय-अमेरिकी हैं।

फ्रैंकलिन टाउनशिप, न्यू जर्सी की ओक ट्री रोड से ड्राइव करके जाते हुए तमाम स्टोर रंग-बिरंगी भारतीय साड़ियों, सोने के आकर्षक आभूषणों और बॉलीवुड के फिल्मी कलाकारों के पोस्टरों से सजे-धजे दिखाई देते हैं। नियॉन साइनबोर्ड 'किंग कबाब' में लजीज चीजें खाने को आमंत्रित करते हैं। एक और साइनबोर्ड इस्लिन स्थित महात्मा गांधी प्लाजा में आपके पहुंच जाने के बारे में संकेत करता है। इस शॉपिंग सेंटर में ज्यादातर भारतीय स्टोर हैं। मैनहट्टन की आपाधापी से एक घंटे की रेल यात्रा की दूरी पर यह वास्तव में न्यू जर्सी का देशी इलाका है।

न्यू जर्सी के इस परिचय के बाद भारतीय मूल के दो लोगों की चर्चा कतई बेमेल नहीं लगेगी। उन दोनों में स्टेट एसेंबली के 8 नवंबर को हुए चुनाव में सीट जीतने के लिए होड़ लगी थी। न्यू जर्सी में राज्यों के प्रतिनिधि (स्टेट लेजिस्लेटर) लगभग समान आबादी वाले 40 विधाई जिलों से निर्वाचित होते हैं। प्रत्येक जिले के मतदाता एक सीनेटर और जनरल एसेंबली के दो सदस्यों का निर्वाचन करते हैं। जिला 17 में जहां डेमोक्रेट मतदाताओं की संख्या रिपब्लिकन मतदाताओं की तुलना में तिगुनी है, वहां एसेंबली के लिए दो डेमोक्रेट दुबारा चुन लिए गए: आंध्र प्रदेश निवासी उपेन्द्र चिवुकुला और जॉसेफ वी. एगान। दो रिपब्लिकन उम्मीदवार हार गए: तंजानिया में जन्मे भारतीय अमेरिकी सलीम नाथू और कैथरीन जे. बैरियर। एगान को 28,598, चिवुकुला को 27,364, बैरियर को 15,309 और नाथू को 13,204 मत मिले।

भारत और अमेरिका दोनों जगह गलत समाचार फैल गया कि चुनाव चिवुकुला और नाथू के बीच है। नाथू कहते हैं, ''हम मतदाताओं को समझाने की कोशिश करते रहे कि वे उपेंद्र और मुझे, दोनों को अपना मत दे सकते हैं। सीटें दो हैं, दोनों में से एक, जैसी कोई बात नहीं है।'' जिला 17 में फ्रैंकलिन टाउनशिप, हाइलैंड पार्क, मिलटाउन, पिस्कैटवे तथा न्यू ब्रंसविक आते हैं। साथ ही यहां रजर्स यूनिवर्सिटी कैंपस और व्यक्तिगत स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों का निर्माण करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनी जॉनसन एंड जॉनसन का मुख्यालय भी है।

न्यू ब्रंसविक कभी पूर्वी यूरोप के आप्रवासियों का केंद्र माना जाता था और 'सर्वाधिक हंगेरियन शहर' कहलाता था। 1930 में वहां की आबादी का पांचवा हिस्सा या तो हंगरी में जन्मे या हंगरी मूल के लोगों का था। अमेरिका की वर्ष 2000 की जनगणना के अनुसार आज, वहां 13.9 प्रतिशत आबादी एशियाई मूल के लोगों की है। 39 प्रतिशत हिस्पानी मूल के और 20 प्रतिशत अफ्रीकी अमेरिकी मूल के लोग हैं।

चिवुकुला (55) का जन्म आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में हुआ था। वह 1974 में न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी के सिटी कॉलेज से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरी में स्नातक डिग्री की पढ़ाई के लिए आए थे। फ्रैंकलिन टाउनशिप के निवासी चिवुकुला न्यू जर्सी विधानमंडल (लेजिस्लेचर) में पहुंचने वाले पहले दक्षिण एशियाई व्यक्ति हैं। इसमें दो सदन हैं: 40 सदस्यीय सीनेट और 80 सदस्यीय जनरल एसेंबली। वह अमेरिका में राज्य सरकार के किसी

उपेंद्र चिवुकुला (दाहिने बैठे हुए): न्यू जर्सी जनरल असेंबली के लिए पुनर्निर्वाचित होने के बाद दिसंबर 2005 में अपने साथियों से विचार-विमर्श करते हुए।

पद के लिए निर्वाचित होने वाले चौथे भारतीय अमेरिकी हैं। वह वर्ष 2000 में फ्रैंकलिन टाउनशिप के मेयर, 1998 में डिप्टी मेयर और 1997 से 2005 तक फ्रैंकलिन टाउनशिप काउंसिल में रह चुके हैं।

नवंबर में स्टेट एसेंबली के लिए तीसरी बार चुने गए चिवुकुला अपनी सफलता का श्रेय ''मतदाताओं के लिए किए गए काम'' को देते हैं। ''मतदाताओं के लिए उपलब्ध रहना राजनीति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मैंने विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से संबंधित कुछ कानून बनवाए, उपभोक्ताओं से संबंधित कानून भी बनवाए जैसे गाड़ी चलाते समय नशा संबंधी (डी डब्लू आई), और पूर्व सैनिकों की विधवाओं के लिए संपत्ति कर में छूट दिलाने का प्रयास कर रहा हूं। मैं डेमोक्रेट एजेंडा के तहत स्थानीय कस्बों और स्कूलों को सहायता देने का 100 प्रतिशत समर्थन करता हूं।''

चिवुकुला के परिवार का राजनीति से कोई संबंध नहीं था लेकिन 1980 के दशक में चिवुकुला को लगा कि एशियाई अमेरिकी लोग राजनीति में योगदान नहीं दे रहे हैं। वह कहते हैं, ''मैंने स्वयंसेवक की तरह काम करके उन्हें इस ओर प्रेरित करने का निश्चय किया।'' उनके अनुसार, ''भारतीय अमेरिकी समुदाय आगे बढ़ रहा है बल्कि आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है लेकिन मैं यह बात पक्के तौर पर नहीं कह सकता हूं कि वे बहुत सफल हुए हैं।'' चिवुकुला न्यूयॉर्क स्थित एक सॉफ्टवेयर तथा शैक्षिक परामर्शदात्री कंपनी अंटार्कटिका ग्रुप के प्रबंध निदेशक हैं। वह कहते हैं, ''राजनीतिक जीवन में कुछ बलिदान करना ही पड़ता है। व्यक्तिगत, राजनीतिक और व्यावसायिक जीवन के बीच तालमेल बिठाना असली चुनौती है। साथ ही आप अपने मतदाताओं और उनकी समस्याओं की अनदेखी भी नहीं कर सकते।'' उनका कहना है कि उनकी पत्नी डायसी और बच्चों- सूरज व दमयंती ने उनके अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चिवुकुला की तरह ही नाथू के परिवार ने भी स्थानीय सुपर बाजारों में पर्चे बांटे। उनके परिवार में पत्नी शोलिना है जो लेखाकार हैं और शिक्षक बनने के लिए पढ़ाई कर रही हैं। दो बेटे हैं- इसाक (6) तथा एडम (5)। दांतों के डॉक्टर नाथू (50) मुस्लिम हैं। उनका जन्म तंजानिया में हुआ मगर उनकी पारिवारिक जड़ें जामनगर, गुजरात में हैं। वह 1980 में अमेरिका आए। न्यूयार्क यूनिवर्सिटी, मैनहट्टन से जैवरसायन विज्ञान में पीएच.डी. करने के बाद उन्हें कोलगेट-पामोलिव कंपनी में काम मिल गया और वह पिस्कैटवे चले आए जहां कंपनी की अनुसंधान सुविधा थी। उनका कहना है कि वह स्थानीय सरकार की असंवेदनशीलता से ऊब कर राजनीति में आए। उन्होंने स्थानीय मेयर से कई बार कहा कि उनके घर के पास से जाने वाली सड़क पर वाहनों की गति सीमा 72 किलोमीटर प्रति घंटा से कम कर दी जाए। वह कहते हैं, ''मुझे लगा वह गति-सीमा सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं है। मैं 10 साल तक इस मामले पर लड़ता रहा और अंत में मैंने मेयर से कहा- गति सीमा घटाने का एक ही रास्ता है कि मैं आपके खिलाफ चुनाव लड़ूं!'' पिस्कैटवे टाउन काउंसिल की सीट के चुनाव में वह हार गए, लेकिन पीछे नहीं हटे। वह कहते हैं, ''मैं जितना ही इस क्षेत्र में आगे बढ़ा, मुझे लगा कि ये लोग हर चीज को मामूली तौर पर लेते हैं। हमारे कर (टैक्स) बढ़ते जाते हैं, हमारे स्कूलों में भीड़ बढ़ती जाती है। संपत्ति कर के नाम पर हम इतना अधिक पैसा देते हैं। पैसे का कोई मूल्य ही नहीं है।'' अंततः गति सीमा आठ किलोमीटर प्रति घंटा तक कम कर दी गई। लेकिन वह संतुष्ट नहीं हैं। उनका कहना है, ''हम चाहते हैं कि इसे 56 किलोमीटर प्रति घंटा होना चाहिए।'' जिला 17 में यद्यपि संपत्ति कर की ऊंची दरों और स्कूलों में भारी भीड़ जैसे मुद्दों पर जमकर राजनीतिक बहस होती है लेकिन उम्मीदवार राष्ट्रीय मुद्दों से भी बेखबर नहीं थे। चिवुकुला कहते हैं, ''ईराक युद्ध चुनाव का एक बड़ा मुद्दा था। हमारा सारा धन विदेश भेजा जा रहा है (युद्ध लड़ने के लिए)। जब कैटरीना तूफान आया और हम लोग असहाय हो गए थे तो इस मुद्दे को खूब उछाला गया। आर्थिक सहायता, आवास की कमी, गरीबी, स्वास्थ्य की देखभाल और सरकार में नैतिकता जैसे तमाम मुद्दे हैं। हमें चिकित्सा क्षेत्र की गड़बड़ियों पर भी ध्यान देना है जो एशियाई अमेरिकी लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उनमें से काफी लोग चिकित्सा व्यवसाय में हैं।'' नाथू कहते हैं कि राज्य में संपत्ति कर सुधार की अत्यंत आवश्यकता है। वह आरोप लगाते हैं, ''हमारा पैसा बिना निविदाओं के ठेकों और राजनीति का खेल खेलने पर बर्बाद होता है। अगर कोई ठेकेदार कोई काम करना चाहता है तो वह इसके के लिए राजनीतिज्ञ को पैसा खिलाता है। इस तरह पूरा तंत्र भ्रष्ट हो जाता है और हमें हर सेवा के लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। इनकी कीमत अधिक होने के कारण हमें अधिक टैक्स देना पड़ता है।'' वह महसूस करते हैं कि इसका समाधान यही है कि संपत्ति कर की बढ़ोतरी पर एकदम रोक लगा देनी चाहिए और राज्य सरकार ऊंचे दाम में दिए गए ठेकों का फिर से मोलभाव करे। दोनों में से एक भी उम्मीदवार का ध्यान इस ओर नहीं गया कि भारत और चीन से नौकरियों की आउटसोर्सिंग चुनाव का एक बड़ा मुद्दा था। नाथू पिस्कैटवे में दांतों संबंधी उत्पादों का परीक्षण करने वाली 'ओरल हैल्थ क्लिनिकल सर्विसेज' संस्था चलाते हैं। वह कहते हैं, ''सारा व्यापार न्यू जर्सी से बाहर जा रहा है क्योंकि यहां की पाबंदियों के तहत व्यापार करना बहुत मुश्किल है।''

देव जोशी 'ग्लिंप्सेज ऑफ इंडिया- भारत दर्शन' रेडियो शो के कार्यकारी निर्माता हैं। यह शो हर रविवार को दोपहर बाद न्यू ब्रंसविक स्टेशन डब्लू आर एस यू- एफ एम 88.7 पर प्रसारित होता है। वह कहते हैं कि मतदाताओं के बीच राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश की कम स्वीकार्यता रेटिंग के कारण नाथू और अन्य रिपब्लिकन उम्मीदवारों को कोई लाभ नहीं मिल सका। जोशी के अनुसार, ''नाथू के साथ एक और समस्या भी थी। राजनीति में उनका अनुभव उनके विरोधियों की तुलना में कम था। बल्कि, चिवुकुला जागरूक आदमी हैं क्योंकि वे लोगों के लिए उपलब्ध रहते हैं और लोग उनसे संपर्क कर सकते हैं। वह सच्चे और ईमानदार व्यक्ति हैं।''

न्यू जर्सी: पानी से घिरा है यह गार्डन स्टेट

न्यू जर्सी को गार्डन स्टेट भी कहा जाता है। यह मिस अमेरिका सौंदर्य प्रतियोगिता, प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी और थॉमस एडिसन की उस प्रयोगशाला के लिए प्रसिद्ध है जिसमें उन्होंने बिजली के बल्ब का आविष्कार किया था। राज्य की 6 प्रतिशत आबादी एशियाई मूल की है जिसमें से ज्यादातर लोग भारतीय अमेरिकी नागरिक हैं। स्वतंत्र रूप से फहराए जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा ध्वज यहीं है। यह सबसे लंबी बोर्डवाक और सबसे बड़े पतंग उत्सव के लिए भी प्रख्यात है। पेट्रोलियम, रसायन और औषधि निर्माण जैसे भारी उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था का आधार हैं। इनके कारण राज्य के कई इलाकों का वातावरण दुर्गंधमय है और हवा प्रदूषित हो गई है। लेकिन, राज्य के मध्य भाग में पूर्वी तट पर कुछ बेहद साफ-सुथरे समुद्र तट हैं। न्यूयार्क राज्य से लगी 80 किलोमीटर सीमा को छोड़कर पूरा न्यू जर्सी राज्य पानी से घिरा है। न्यू जर्सी से तमाम लोग काम करने के लिए न्यूयार्क आते-जाते रहते हैं। पर्यटन आर्थिक आय का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है। एटलांटिक सिटी अपने मनोरंजन केंद्रों और जुआ घरों के कारण भी बड़े आकर्षण का केंद्र है। इसी शहर के समुद तट पर 8 किलोमीटर लंबे बोर्डवाक के दौरान 1921 में पहली बार पहली मिस अमेरिका प्रतियोगिता की सुंदरियां नहाने वाली पोशाक में उतरी थीं। —ए.वी.एन.

जोशी के शो का प्रसारण न्यू जर्सी के मध्यवर्त्ती भाग में होता है। वह यह स्वीकार करते हैं कि नाथू के पास कर और स्वास्थ्य बीमा की लागत घटाने के नए विचार थे।

युद्ध के बारे में नाथू के विचार डेमोक्रेटों से अलग नहीं थे। वह भी चाहते हैं कि सेना जल्दी से जल्दी वापस लौट आए। वह कहते हैं, ''हमें निश्चित योजना बनानी चाहिए और आज ही बनानी चाहिए। मैं मुसलमान हूं और जानता हूं कि (अमेरिका में) कुछ इस्लामी समुदाय हैं जो इससे बहुत चिंतित हैं।''

चुनाव परिणाम जिला 17 के राजनीतिक स्वरूप की ही तस्वीर पेश करता है। वहां रिपब्लिकनों की तुलना में लगभग तीन गुना पंजीकृत डेमोक्रेट मतदाता हैं। न्यू जर्सी के केवल तीन अन्य जिलों में 2001 में पंजीकृत रिपब्लिकन मतदाताओं का प्रतिशत कम था। चिवुकुला और ऐगान के अलावा डेमोक्रेट बॉब स्मिथ सीनेट में इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह अपनी ही फर्म में एटार्नी हैं। विडंबना यह है कि नाथू कभी डेमोक्रेट थे और स्मिथ पिस्कैट के एक कार्यालय कांप्लेक्स में उनके पड़ोसी हैं। नाथू याद करते हुए कहते हैं, ''बॉब मेरे पीछे पड़े रहे कि डेमोक्रेटिक पार्टी के टिकट पर लड़ो, उस पर जीतने के आसार ज्यादा है।'' अफ्रीकी-अमेरिकी तथा हिस्पानी आबादी बहुल पास-पड़ोस के इलाकों की ओर जाते हुए वह अपनी कार में बैठे-बैठे ही कहते हैं, ''एक पूर्व डेमोक्रेट के तौर पर मैं कह सकता हूं कि उन्हें यह नहीं लगता कि उनको भारतीय अमेरिकी समुदाय के लिए कुछ करना चाहिए क्योंकि वे सोचते हैं कि हमारा मत (वोट) तो उन्हें मिलेगा ही। दूसरी ओर, रिपब्लिकन पार्टी सुनती है। हमारे भी वही आदर्श हैं। हमारे लक्ष्य और उद्देश्य भी समान हैं। इसलिए हमारा और उनका संबंध कहीं अधिक स्वाभाविक है। मैंने महसूस किया कि न्यू जर्सी में जो भी खराब पड़ोसी इलाके हैं, वे डेमोक्रेट हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि डेमोक्रट जानते हैं कि आप अपना मत उन्हें ही देंगे।''

नाथू भी कहते हैं कि अपने अभियान के दौरान उन्होंने भी इन इलाकों में अपने समय और संसाधनों का उपयोग करने के बारे में नहीं सोचा। वह बताते हैं, ''हम कुछ भी कर लें, वे अपना मत डेमोक्रेटों को ही देंगे।'' उन्हें इस बात से भी नुकसान हुआ कि उन्होंने अभियान में देर से भाग लिया क्योंकि उनके मित्र और पहले उम्मीदवार अफ्रीकी अमेरिकी चार्ल्स एडवर्ड्स को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। वह कहते हैं, ''जब चार्ल्स का निधन हो गया तो मैंने उसकी खातिर चुनाव लड़ा।''

जिला 17 की करीब 6 प्रतिशत आबादी भारतीय अमेरिकी नागरिकों की है लेकिन अपने मतदान से वे चुनाव का परिणाम तय नहीं कर सकते थे। चिवुकुला कहते हैं, ''चुनाव जीतने के लिए आपको लोगों का सहयोग चाहिए। आप केवल भारतीय मतों पर निर्भर नहीं कर सकते।'' उनका कहना है कि वह विभिन्न मूल के समुदायों के सहयोग से जीते हैं। चुनाव लड़ने वाले दूसरे भारतीय अमेरिकी से उनके अभियान में कोई अंतर नहीं पड़ा। चिवुकुला अपने आप को समुदाय के आदर्श के रूप में देखना चाहते हैं। वह मानते हैं कि भारतीय अमेरिकी लोगों ने भी उनकी मदद की। ''राजनीतिक काम के लिए चंदा देना उनके लिए नई बात है। वे कहां पैसा देते हैं, इसका ध्यान रखते हैं। हमारे समुदाय में कई तरह के अंतर हैं। 10 अलग-अलग संस्थाओं की ओर से 1,000 डालर देने के बजाय यह ठीक माना जाता है कि एक की ओर से 1,00,000 डालर की राशि दे दी जाए।'' नाथू यह भी कहते हैं कि उन्होंने भारतीय अमेरिकी मतों को पाने की कोशिश नहीं की। फिर भी, मुझे भारतीय अमेरिकी समुदाय का भरपूर सहयोग मिला।'' वह कहते हैं कि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनका संबंध भारतीय अमेरिकी समुदाय से है। अच्छे स्कूलों ओर मेडिकल कॉलेजों में भारतीय अमेरिकी बच्चों के दाखिले के लिए ज्यादा परेशानी उठानी पड़ती है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि स्कूल अपनी कक्षाओं को सीधे 'ए' श्रेणी के छात्रों से नहीं भरना चाहते क्योंकि उसमें वित्तीय सहायता नहीं मिलने का खतरा रहता है। अन्य स्कूल नस्लीय असंतुलन से डरते हैं। वह कहते हैं, ''अगर वे ग्रेड के आधार पर दाखिला करें तो स्कूलों में बहुत अधिक भारतीय हो जाएंगे। वे ऐसा नस्लीय असंतुलन नहीं चाहते। मेरे विचार से यह गलत है।''

नाथू अपने मित्रों के उदाहरण देकर बताते हैं कि उन्होंने अपने बच्चे अमेरिका से बाहर के मेडिकल स्कूलों में भेजे क्योंकि उन्हें अमेरिकी कॉलेजों में दाखिला नहीं मिल सका। इंदिरा सिंहा इसेलिन के एक भारतीय-पाकिस्तानी रेस्तरां 'राजभोग स्वीट्स' में अपने परिवार के साथ खरीददारी करती हुई मिल जाती हैं। अमेरिका की वर्ष 2000 की जनगणना के अनुसार इसेलिन की 17 प्रतिशत आबादी एशियाई भारतीय है। वह कहती हैं कि चुनाव में भारतीय मूल के उम्मीदवार थे। यह अतिरिक्त फायदे की बात थी। वह कहती हैं, ''पर मेरे लिए मुद्दे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। चिवुकुला ने पिछले कुछ वर्षों में हमारे लिए काम किया है। आप जाने-पहचाने नाम का ही समर्थन करेंगे।'' इसेलिन में ही के. बी. जावेरी ज्वेलर्स के यहां स्वर्णाभूषणों को देखती हुई राधिका सिंह कहती हैं कि जिला 17 में ही दो भारतीय अमेरिकी उम्मीदवारों का होना जरा असामान्य-सी बात है। राधिका सिंह एक्जिक्यूटिव हैं और नौकरी के लिए न्यूयॉर्क जाती हैं। वह कहती हैं, ''भले ही वे भारतीय हों लेकिन जब राजनीति की बात है तो वे या तो लाल या नीले रिपब्लिकन अथवा डेमोक्रेट होंगे। ओक ट्री रोड के बर्फीले किनारों पर चलती हुई सिंथिया जैकसन कहती हैं, उन्हें यह विचार ही नहीं आया कि चिवुकुला और नाथू भारतीय मूल के हैं। वह कहती हैं, ''वे दोनों एक अरसे से इस समुदाय का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। मैंने उन्हें कभी बाहरी व्यक्ति नहीं माना।'' □

एडिसन, न्यू जर्सी में दिसंबर 2005 में ओक ट्री रोड पर एक दुकान से पान खरीदते डॉ. सलीम नाथू। 8 नवंबर को हुए स्टेट असेंबली चुनाव में वह पराजित हो गए।

आशीष कुमार सेन

लेखक: *आशीष कुमार सेन वाशिंगटन में रहते हैं और द वाशिंगटन पोस्ट में काम करते हैं। वह द ट्रिब्यून तथा आउटलुक के लिए भी लिखते हैं।*